अन्तर्राश्ट्रीय मंच पर दक्षिण–दक्षिण संवादः एक अध्ययन

डॉ0 आरती कुमारी

प्रस्तुत शोध पत्र में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विकासशील राष्ट्रों के आर्थिक विकास हेतु स्थापित दक्षिण–दक्षिण संवाद पर आवश्यकतानुसार किये गए नये–नये संगठनों पर विस्तार पूर्वक चर्चा की गयी है जो गरीब राष्ट्रों के लिए संबल का काम कर रही है।

आज आर्थिक एवं रानीतिक क्षेत्रों में विश्व दो भागों में बँटा हुआ है– उत्तर और दक्षिण। उत्तर अमिर देशों का प्रतीक है जबकि दक्षिण निर्धन अर्थात विकासशील देशों का। दक्षिण–दक्षिण संवाद का अभिप्राय है विकासशील देशों के मध्य आर्थिक सहयोग के लिए विचार–विमर्श अथवा आपसी सहयोग के आधार की खोज। दक्षिण–दक्षिण सहयोग का शुरूआत 1964 में नयी दिल्ली में आयोजित द्वितीय अंकटाड के सम्मेलन में विकासशील राष्ट्रों में अपनी सहयोग की आवश्यकता पर बल देने के साथ हुआ था इसके बाद 1970 के लुसाका सम्मेलन में दक्षिण–दक्षिण सहयोग की अवधारणा पर विचार विमर्श हुआ। 1974 में संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा में जब "नयी अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था" (NIEO) का अवाहन किया गया तो उसने विकासशील राष्ट्रों के आपसी सहयोग का विशेष उल्लेख किया गया था।